4 गोस्वामी तुलसीदास

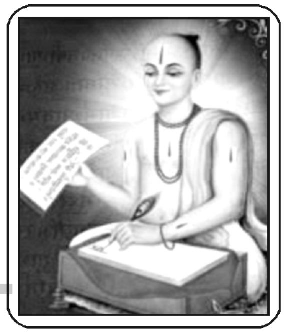

"तुलसी एक ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रतिभा थे, जो युगों के बाद एक बार आया करती है तथा ज्ञान-विज्ञान, भाव-विभाव अनेक तत्त्वों का समाहार होती है। इनकी प्रतिभा इतनी विराट् थी कि उसने भारतीय संस्कृति की सारी विराटता को आत्मसात् कर लिया था। ये महान् द्रष्टा थे, परिणामतः स्रष्टा थे। ये विश्व-कवि थे और हिन्दी साहित्य के आकाश थे, सब कुछ इनके घेरे में था।"

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—संवत 1554 वि॰ (1532 ई॰)।
- **जन्म-स्थान**—राजापुर (चित्रकूट), उत्तर प्रदेश।
- **बचपन का नाम**—रामबोला।
- **प्रमुख ग्रन्थ**—रामचरितमानस।
- **माता-पिता**—हुलसी एवं आत्माराम दुबे।
- **पत्नी का नाम**—रत्नावली।
- **शिक्षा**—सन्त बाबा नरहरिदास से भक्ति की शिक्षा, वेद-वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि।
- **भक्ति**—रामभक्ति।
- **उपलब्धि**—लोकमानस कवि।
- **मृत्यु**–संवत 1680 वि॰ (1623 ई॰)।
- **साहित्य में योगदान**—हिन्दी साहित्य में कविता की सर्वतोन्मुखी उन्नति।

गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-वृत्त के बारे में अन्तःसाक्ष्य एवं बहिःसाक्ष्य के आधार पर विद्वानों ने विविध मत प्रस्तुत किये हैं। बेनीमाधवदास-प्रणीत 'मूल गोसाईं चरित' तथा महात्मा रघुबरदास-रचित 'तुलसी चरित' में गोस्वामी जी का जन्म-संवत् 1554 दिया हुआ है। बेनीमाधवदास जी की रचना में गोस्वामी जी की जन्मतिथि श्रावण शुक्ला सप्तमी का भी उल्लेख है। इस संवत् के अनुसार इनकी आयु 126-127 वर्ष की ठहरती है। 'शिवसिंह सरोज' में इनका जन्म-संवत् 1583 स्वीकार किया गया है। कुछ विद्वानों ने जनश्रुति के आधार पर इनका जन्म-संवत् 1589 स्वीकार किया है। सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने भी इसी जन्म-संवत् को मान्यता दी है। अन्तःसाक्ष्य के आधार पर भी इनकी जन्मतिथि सं. 1589 (सन् 1532) अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होती है। इसी प्रकार इनके जन्म-स्थान के बारे में भी विद्वानों में भारी मतभेद है। नवप्राप्त आधारों पर सोरों को कुछ लोग इनका जन्म-स्थान प्रमाणित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। तुलसीदास ने रामचरितमानस में यह उल्लेख अवश्य किया है–"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत। समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत।।" किन्तु, इससे

इतना ही परिणाम निकलता है कि सूकरखेत में उन्होंने गुरु से बालपन में रामकथा सुनी। तुलसीदास का जन्म संवत 1554 वि0 को वर्तमान चित्रकूट जिले के अन्तर्गत राजापुर में मानना उपयुक्त एवं तर्कसंगत प्रतीत होता है। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनका बचपन का नाम 'तुलाराम' था। इनके जन्म के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

पन्द्रह सौ चौवन बिसे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्‍यो शरीर॥

इनका जब जन्म हुआ तब ये पाँच वर्ष के बालक मालूम होते थे, दाँत सब मौजूद थे और जन्मते ही इनके मुख से 'राम' का शब्द निकला। इसीलिए इन्हें रामबोला भी कहा जाता है। आश्चर्यचकित होकर, इन्हें राक्षस समझकर माता-पिता द्वारा त्याग दिये जाने के कारण इनका पालन-पोषण एक दासी ने तथा ज्ञान एवं भक्ति की शिक्षा प्रसिद्ध सन्त बाबा नरहरिदास ने प्रदान की। इनका विवाह रत्नावली के साथ हुआ था। ऐसा प्रसिद्ध है कि रत्नावली की फटकार से ही इनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। कहा जाता है कि एक बार पत्नी द्वारा बिना बताये ही मायके चले जाने पर प्रेमातुर तुलसी अर्द्धरात्रि में आँधी-तूफान का सामना करते हुए अपनी ससुराल जा पहुँचे। पत्नी ने इसके लिए इन्हें फटकारा। फटकार से इन्हें वैराग्य हो गया। इसके बाद काशी के विद्वान् शेष सनातन से तुलसी ने वेद-वेदांग का ज्ञान प्राप्त किया और अनेक तीर्थों का भ्रमण करते हुए राम के पवित्र चरित्र का गान करने लगे। इनका समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में अधिक व्यतीत हुआ। संवत 1680 में श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया शनिवार को असीघाट पर तुलसीदास राम-राम कहते हुए परमात्मा में विलीन हो गये। इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है—

संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर॥

ये राम के भक्त थे। इनकी भक्ति दास्य-भाव की थी। संवत् 1631 में इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ **'रामचरितमानस'** की रचना आरम्भ की। इनके इस ग्रन्थ में विस्तार के साथ राम के चरित्र का वर्णन है। तुलसी के राम में शक्ति, शील और सौन्दर्य तीनों गुणों का अपूर्व सामंजस्य है। मानव-जीवन के सभी उच्चादर्शों का समावेश करके इन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया है। अवधी भाषा में रचित रामचरितमानस बड़ा ही लोकप्रिय ग्रन्थ है। विश्व-साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों में इसकी गणना की जाती है। 'रामचरितमानस' के अतिरिक्त इन्होंने **'जानकी-मंगल'**, **'पार्वती-मंगल'**, **'रामलला-नहछू'**, **'रामाज्ञा प्रश्न'**, **'बरवै रामायण'**, **'वैराग्य संदीपनी'**, **'कृष्ण गीतावली'**, **'दोहावली'**, **'कवितावली'**, **'गीतावली'** तथा **'विनय-पत्रिका'** आदि ग्रन्थों की रचना की। इनकी रचनाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है।

अपने समय तक प्रचलित दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, पद आदि काव्य-शैलियों में तुलसी ने पूर्ण सफलता के साथ काव्य-रचना की है। दोहावली में दोहा पद्धति, रामचरितमानस में दोहा-चौपाई पद्धति, विनयपत्रिका में गीति पद्धति, कवितावली में कवित्त-सवैया पद्धति को इन्होंने अपनाया। इन सभी शैलियों में इन्हें अद्‌भुत सफलता मिली है। जो इनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा तथा काव्यशास्त्र में इनकी गहन अन्तर्दृष्टि की परिचायक है। इनके काव्य में भाव-पक्ष के साथ कला-पक्ष की भी पूर्णता है। उसमें सभी रसों का आनन्द प्राप्त होता है। स्वाभाविक रूप में सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग करके तुलसी ने अपनी रचनाओं को प्रभावोत्पादक बना दिया है। इनका ब्रज भाषा तथा अवधी भाषा पर समान अधिकार था। कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका आदि रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं और रामचरितमानस अवधी में। अवधी को साहित्यिक रूप प्रदान करने के लिए इन्होंने संस्कृत शब्द का भी प्रयोग किया है, पर इससे कहीं भी दुरूहता नहीं आने पायी है।

काव्य के उद्देश्य के सम्बन्ध में तुलसी का दृष्टिकोण सर्वथा सामाजिक था। इनके मत में वही कीर्ति, कविता और सम्पत्ति उत्तम है जो गंगा के समान सबका हित करनेवाली हो—**'कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सबकर हित होई।'** सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन का उच्चतम आदर्श जनमानस के समक्ष रखना ही इनका काव्यादर्श था। जीवन के मार्मिक स्थलों की इनको अद्‌भुत पहचान थी। तुलसीदास ने राम के शक्ति, शील, सौन्दर्य समन्वित रूप की अवतारणा की है। इनका सम्पूर्ण काव्य समन्वयवाद की विराट् चेष्टा है। ज्ञान की अपेक्षा भक्ति का राजपथ ही इन्हें अधिक रुचिकर लगता है।

●●●

भरत-महिमा

[गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस से अवतरित प्रस्तुत प्रसंग में भरत की भ्रातृ-भक्ति को उद्घाटित किया है। राम को पिता के द्वारा वनवास दिये जाने के बाद भरत उनको वापस बुलाने के लिए पैदल ही वन की ओर चल देते हैं। उनका भ्रातृ-प्रेम आदर्श एवं अनुकरणीय है। तभी तो तुलसीदास ने कहा है—'भरत सम भाई हुवे हैं न होहुँगे।']

दो0– चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहिं भरत सरिस को आजु॥1॥

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू।।
जो किछु कहब थोर सखि सोई। राम बंधु अस काहे न होई।।
हम सब सानुज भरतहि देखें। भइन्ह धन्य जुबती जन लेखें।।
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं। कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीं।।
कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिन। बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन।।
कहँ हम लोक बेद विधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी।।
बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा। कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा।।
अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा। जनु मरुभूमि कलपतरु जामा।।

दो0- तेहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ।
राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ॥2॥

मंगल सगुन होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू।।
भरतहिं सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाहू।।
करत मनोरथ जस जियँ जाके। जाहिं सनेह सुराँ सब छाके।।
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं। बिहवल बचन पेम बस बोलहिं।।
रामसखाँ तेहि समय देखावा। सैल सिरोमनि सहज सुहावा।।
जासु समीप सरित पय तीरा। सीय समेत बसहिं दोउ बीरा।।
देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकि जीवन रामा।।
प्रेम मगन अस राजसमाजू। जनु फिरि अवध चले रघुराजू।।

दो0-भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु अह मम मलिन जनेषु॥3॥

सकल सनेह सिथिल रघुबर कें। गए कोस दुई दिनकर ढरकें।।
जलु थलु देखि बसे निसि बीतें। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीतें।।
उहाँ रामु रजनी अवसेषा। जागे सीयँ सपन अस देखा।।
सहित समाज भरत जनु आए। नाथ वियोग ताप तन ताए।।
सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखीं सासु आन अनुहारी।।
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भए सोचबस सोच बिमोचन।।
लखन सपन यह नीक न होई। कठिन कुचाह सुनाइहि कोई।।
अस कहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने।।

छं0- सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भए।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गए।।
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे।।

सो0-सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल।।4।।

X X X

दो0- भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ।।5।।

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई।।
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी। सहज छमा बरु छाड़ै छोनी।।
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृपमदु भरतहि भाई।।
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना।।
सगुनु खीरु, अवगुन, जलु ताता। मिलइ रचइ परपंचु बिधाता।।
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा।।
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्हि उजियारी।।
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ। पेम पयोधि मगन रघुराऊ।।

दो0- सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु।।6।।

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को।।
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा।।
लखन राम सियँ सुनि सुर बानी। अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी।।
इहाँ भरतु सब सहित सहाए। मंदाकिनी पुनीत नहाए।।

सरित समीप राखि सब लोगा। मागि मातु गुर सचिव नियोगा।।
चले भरतु जहँ सिय रघुराई। साथ निषादनाथु लघु भाई।।
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतरक कोटि मन माहीं।।
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ।।

दो०- मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर।।7।।

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी। जौं सनमानहिं सेवकु मानी।।
मोरें सरन रामहि की पनही। राम सुस्वामि दोसु सब जनहीं।।
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नबीना।।
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता।।
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी। चलत भगति बल धीरज धोरी।।
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ।।
भरत दसा तेहि अवसर कैसी। जल प्रवाहँ जल अलि गति जैसी।।
देखि भरत कर सोचु सनेहू। भा निषाद तेहि समयँ बिदेहू।।

दो०- मिलि सपेम रिपुसूदनहिं केवटु भेंटेउ राम।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम।।8।।

भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई। बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई।।
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे। अभिमत आसिष पाइ अनंदे।।
सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि सिर सिय पद पदुम परागा।।
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए। सिर कर कमल परसि बैठाए।।
सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं। मगन सनेहँ देह सुधि नाहीं।।
सब बिधि सानुकूल लखि सीता। भे निसोच उर अपडर बीता।।
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा। प्रेम भरा मन निज गति छूँछा।।
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि। जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि।।

दो०- नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग।
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल वियोग।।9।।

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू। सिय समीप राखे रिपुदवनू।।
चले सबेग रामु तेहि काला। धीर धरम धुर दीनदयाला।।
गुरहि देखि सानुज अनुरागे। दंड प्रनाम करत प्रभु लागे।।
मुनिवर धाइ लिए उर लाई। प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई।।
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरि ते दंड प्रनामू।।
रामसखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुठत सनेह समेटा।।

रघुपति भगति सुमंगल मूला। नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला।।
एहि सम निकट नीच कोउ नाहीं। बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं।।

दो0- जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ।
सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ॥10॥

('रामचरितमानस' से)

कवितावली

[प्रस्तुत प्रसंग में हनुमान् जी द्वारा जलाई जा रही लंका और लंकानिवासी राक्षसों की व्याकुलता का अत्यन्त सजीव चित्र खींचा गया है।]

लंका-दहन

बालधी विसाल विकराल ज्वाल-जाल मानौं,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है।
कैधौं ब्योमबीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,
बीररस बीर तरवारि सी उघारी है।।
तुलसी सुरेस चाप, कैधौं दामिनी कलाप,
कैधौं चली मेरु तें कृसानु-सरि भारी है।
देखे जातुधान जातुधानी अकुलानी कहैं,
"कानन उजार्‌यो अब नगर प्रजारी है"।।1।।

हाट, बाट, कोट, ओट, अट्टनि, अगार, पौरि,
खोरि खोरि दौरि दौरि दीन्ही अति आगि है।
आरत पुकारत, सँभारत न कोऊ काहू,
ब्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि हैं।।
बालधी फिरावै बार बार झहरावै, झरैं
बूँदिया सी लंक पघिलाइ पाग पागिहैं।
तुलसी बिलोकि अकुलानी जातुधानी कहैं
"चित्रहू के कपि सों निसाचर न लागिहैं"।।2।।

लपट कराल ज्वालजालमाल दहूँ दिसि,
धूम अकुलाने पहिचाने कौन काहि रे?
पानी को ललात, बिललात, जरे गात जात,
परे पाइमाल जात, "भ्रात! तू निबाहि रे।
प्रिया तू पराहि, नाथ तू पराहि, बाप,
बाप! तू पराहि, पूत पूत, तू पराहि रे"।
तुलसी बिलोकि लोग ब्याकुल बिहार कहैं,
"लेहि दससीस अब बीस चख चाहि रे"।।3।।

बीथिका बजार प्रति, अटनि अगार प्रति,
पँवरि पगार प्रति बानर बिलोकिए।
अध ऊर्ध बानर, बिदिसि दिसि बानर हैं,
मानहु रह्यो है भरि बानर तिलोकिए।।
मूँदे आँखि हीय में, उघारे आँखि आगे ठाढ़ो,
धाइ जाइ जहाँ तहाँ और कोऊ को किए?।
"लेहु अब लेहु, तब कोऊ न सिखाओ मानो,
सोई सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिए"।।4।।

गीतावली

जो पै हौं मातु मते महँ ह्वैहौं।
तौ जननी! जग में या मुख की कहाँ कालिमा ध्वैहौं?
क्यों हौं आजु होत सुचि सपथनि? कौन मानिहै साँची?
महिमा-मृगी कौन सुकृती की खल-बच-बिसिखन बाँची?
गहि न जाति रसना काहू की, कहौ जाहि जोइ सूझै।
दीनबंधु कारुन्य-सिंधु बिनु कौन हिए की बूझै?
तुलसी रामबियोग-बिषम-बिष-बिकल नारिनर भारी।
भरत-स्नेह-सुधा सींचे सब भए तेहि समय सुखारी।।1।।

मेरो सब पुरुषारथ थाको।
बिपति बँटावन बंधु-बाहु बिनु करौं भरोसो काको?

सुनु सुग्रीव साँचेहूँ मोपर फेर्‌यो बदन विधाता।।
ऐसे समय समर-संकट हौं तज्यो लखन सो भ्राता।।
गिरि कानन जैहैं साखामृग, हौं पुनि अनुज सँघाती।।
ह्वैहै कहा बिभीषन की गति, रही सोच भरि छाती।।
तुलसी सुनि प्रभु-बचन भालु कपि सकल बिकल हिय हारे।
जामवंत हनुमंत बोलि तब औसर जानि प्रचारे।।2।।

हृदय-घाउ मेरे, पीर रघुबीरै।
पाइ सँजीवनि जागि कहत यों प्रेमपुलकि बिसराय सरीरै।।
मोहिं कहा बूझत पुनि पुनि जैसे पाठ अरथ चरचा कीरै।
सोभा सुख छति लाहु भूप कहँ, केवल कांति मोल हीरै।।
तुलसी सुनि सौमित्रि-बचन सब धनि न सकत धीरौ धीरै।।
उपमा राम-लखन की प्रीति की क्यौं दीजै खीरै-नीरै।।3।।

दोहावली

हरो चरहिं, तापहिं बरत, फरे पसारहिं हाथ।
तुलसी स्वारथ मीत सब, परमारथ रघुनाथ।।1।।

मान राखिबो, माँगिबो, पियसों नित नव नेहु।
तुलसी तीनिउ तब फबैं, जौ चातक मत लेहु।।2।।

नहिं जाचत नहिं संग्रहीं, सीस नाइ नहिं लेइ।
ऐसे मानी माँगनेहि को बारिद बिन देइ।।3।।

चरन चोंच लोचन रँगौ, चलौ मराली चाल।
छीर-नीर बिबरन समय बक उघरत तेहि काल।।4।।

आपु आपु कहँ सब भलो, अपने कहँ कोइ कोइ।
तुलसी सब कहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ।।5।।

ग्रह, भेषज, जल, पवन, पट, पाइ कुजोग सुजोग।
होइ कुबस्तु सुबस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग।।6।।

जो सुनि समुझि अनीतिरत, जागत रहै जु सोइ।
उपदेसिबो जगाइबो तुलसी उचित न होइ।।7।।

बरषत हरषत लोग सब, करषत लखै न कोइ।
तुलसी प्रजा-सुभाग तें भूप भानु सो होइ।।8।।

मंत्री, गुरु अरु बैद जो प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धरम, तन तीनि कर होइ बेगिही नास।।9।।

तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन।
अब तौ दादुर बोलिहैं, हमैं पूछिहै कौन?10।

विनयपत्रिका

[ब्रजभाषा में रचा गया ग्रन्थ विनय-पत्रिका हिन्दी साहित्य का अति सुन्दर गीतिकाव्य है। यह भक्त तुलसी के हृदय का प्रत्यक्ष दर्शन है। आत्मग्लानि, भक्त-हृदय का समर्पण, आराध्य के प्रति भक्त का दैन्य ही विनय-पत्रिका के मुख्य विषय हैं।]

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ-कृपालु-कृपा तें संत सुभाव गहौंगो।।
जथालाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो।।
परहित-निरत निरंतर मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।।
परुषबचन अतिदुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
बिगत मान,सम सीतल मन, पर-गुन, नहिं दोष कहौंगो।।
परिहरि देहजनित चिंता, दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अबिचल हरि भक्ति लहौंगो।।1।।

ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि रामभगति-सुरसरिता आस करत ओसकन की।।
धूमसमूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति घन की।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की।।
ज्यों गच-काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की।
टूटत अति आतुर अहार बस छति बिसारि आनन की।।

कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हौ गति मन की।
तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की।।2।।

हे हरि! कस न हरहु भ्रम भारी?
जद्यपि मृषा सत्य भासै जब लगि नहिं कृपा तुम्हारी।।
अर्थ अबिद्यमान जानिय संसृति नहिं जाइ गोसाईं।
बिनु बाँधे निज हठ सठ परबस पर्यो कीर की नाईं।।
सपने ब्याधि बिबिध बाधा भइ, मृत्यु उपस्थित आई।
बैद अनेक उपाय करहिं, जागे बिनु पीर न जाई।।
स्त्रुति-गुरु-साधु-सुमृति-संमत यह दृश्य सदा दुखकारी।
तेहि बिन तजे, भजे बिन रघुपति बिपति सकै को टारी?।।
बहु उपाय संसार-तरन कहँ बिमल गिरा स्त्रुति गावै।
तुलसिदास 'मैं-मोर' गए बिनु जिय सुख कबहुँ न पावै।।3।।

अब लौं नसानी अब न नसैहौं।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिर न डसैहौं।।
पायो नाम चारु चिंतामनि, उर-कर ते न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन-मधुकर पन करि तुलसी रघुपति पद-कमल बसैहौं।।4।।

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

भरत-महिमा

(क) लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना।
सगुनु खीरु, अवगुन, जलु ताता। मिलइ रचइ परपंचु बिधाता।
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा।।
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्हि उजियारी।।
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ। पेम पयोधि मगन रघुराऊ।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में श्रीरामजी ने किसके गुणों का बखान किया है?
(iv) श्रीराम लक्ष्मण और पिताश्री की शपथ लेकर क्या कहते हैं?
(v) श्रीराम जी ने भरत जी की तुलना हंस से क्यों की है?

(ख) जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी। जौं सनमानहिं सेवकु मानी।।
मोरे सरन रामहि की पनही। राम सुस्वामि दोसु सब जनहीं।।
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नबीना।।
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता।।
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी। चलत भगति बल धीरज धोरी।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) रामचन्द्र जी से मिलने के लिए जाते समय भरत जी मन में क्या विचार कर रहे हैं?
(iv) भरत के अनुसार उनकी शरण कौन-सी है?
(v) इस संसार में यश के पात्र कौन हैं और क्यों?

गीतावली

(ग) हृदय-घाउ मेरे, पीर रघुबीरै।
पाइ सँजीवनि जागि कहत यों प्रेमपुलकि बिसराय सरीरै।।
मोहिं कहा बूझत पुनि पुनि जैसे पाठ अरथ चरचा कीरै।
सोभा सुख छति लाहु भूप कहँ, केवल कांति मोल हीरै।
तुलसी सुनि सौमित्रि-बचन सब धनि न सकत धीरौ धीरै।।
उपमा राम-लखन की प्रीति की क्यौं दीजै खीरै-नीरै।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण ने घाव और पीड़ा के सन्दर्भ में क्या कहा?
(iv) राम और लक्ष्मण के प्रेम के सम्बन्ध में तुलसीदास जी ने क्या कहा है?
(v) पद्यांश के अनुसार लक्ष्मण के घाव की पीड़ा को श्रीराम जी किस प्रकार जान सकते हैं?

दोहावली

(घ) मान राखिबो, माँगिबो, पियसों नित नव नेहु।
तुलसी तीनिउ तब फबैं, जौ चातक मत लेहु।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) चातक जल की याचना किससे करता है?
(iv) कवि के अनुसार व्यक्ति का जीवन कैसे सफल हो सकता है?
(v) इस पद्यांश में किसकी विशेषताओं को बताया गया है?

(ङ) नहिं जाचत नहिं संग्रहीं, सीस नाइ नहिं लेइ।
ऐसे मानी माँगनेहि को बारिद बिन देइ।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) चातक जल ग्रहण कैसे करता है?
(iv) चातक किस नक्षत्र की जल बूँदें ग्रहण करता है?
(v) स्वाभिमानी चातक की याचना को कौन जानता है?

विनयपत्रिका

(च) कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ-कृपालु-कृपा तें संत सुभाव गहौंगो।।
जथालाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो।
परहित-निरत निरंतर मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।।
परुषबचन अतिदुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
बिगत मान, सम सीतल मन, पर-गुन, नहिं दोष कहौंगो।।
परिहरि देहजनित चिंता, दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अबिचल हरि भक्ति लहौंगो।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) तुलसीदास जी श्रीराम से क्या प्रार्थना कर रहे हैं?
(iv) क्रोध और अपमान के सन्दर्भ में तुलसीदास ने क्या कहा है?
(v) तुलसीदास जी किस नियम का निरन्तर पालन करने के लिए कह रहे हैं?

(छ) ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि रामभगति-सुरसरिता आस करत ओसकन की।।
धूमसमूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति घन की।।
नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की।।
ज्यों गच-काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की।।
टूटत अति आतुर अहार बस छति बिसारि आनन की।।

कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि जानत हौ गति मन की।।
तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत पद्यांश में तुलसीदास श्री रामचन्द्र जी से क्या प्रार्थना कर रहे हैं?
(iv) तुलसीदास के अनुसार यह मन किस प्रकार की मूढ़ता कर रहा है?
(v) प्रस्तुत पद्यांश में पपीहे का उल्लेख किस प्रसंग में आया है?

(ज) अब लौं नसानी अब न नसैहौं।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जाये फिर न डसैहौं।।
पायो नाम चारु चिंतामनि, उर-कर ते न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं।।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, नि बस ह्वै न हँसैहौं।
मन-मधुकर पन करि तुलसी रघुपति पद-कमल बसैहौं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) तुलसीदास को कौन-सी चिन्तामणि प्राप्त हो गयी है?
(iv) तुलसीदास जी समाज में उपहास का पात्र क्यों नहीं बनेंगे?
(v) तुलसीदास ने किस पर मुक्ति प्राप्त कर ली है और क्यों?

➥ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
(क) अब लौं नसानी अब न नसैहौं।
(ख) अब तौ दादुर बोलिहैं हमैं पूछिहैं कौन?
(ग) बालधी बिसाल विकराल ज्वाल-जाल मानौं, लंक लीलिबो को काल रसना पसारी है।
(घ) छीर-नीर बिबरन समय बक उघरत तेहि काल।
(ङ) गोपद जल बूड़हिं घटजोनी।
(च) होइ कुबस्तु सुबस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग।
(छ) तुलसी स्वारथ मीत सब, परमारथ रघुनाथ।
(ज) भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ।।
(झ) महिमा मृगी कौन सुकृती की खल-बच बिसिखन बाँची।
(ञ) कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीन सिंधु बिंनसाइ।
(ट) तुलसीदास मैं मोर गये बिन, जिय सुख कबहुँ न पावै।
(ठ) तुलसी प्रजा-सुभाग तें भूप भानु सो होई।

(ड) परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।

(ढ) भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू।

2. 'भायप-भक्ति' क्या होती है? 'भरत-महिमा' के आधार पर भरत का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. "सन्त तुलसीदास जी की रचनाओं में लोक-मंगल का स्वर मुखरित हुआ है।" इस कथन की विशद व्याख्या कीजिए।

अथवा 'तुलसीदास लोककवि थे।' स्पष्ट कीजिए।

4. "लंकादहन तुलसीदास जी की वर्णनात्मक और चित्रात्मक शैली का सुन्दर उदाहरण है।" संकलित अंश के आधार पर इसका विवेचन कीजिए।
5. तुलसीदास की काव्यगत विशेषताओं पर एक निबन्ध लिखिए।
6. तुलसीदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।
7. तुलसीदास का जीवन-परिचय देते हुए उनके काव्य-परिचय का उल्लेख कीजिए।
8. गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।
9. तुलसीदास की काव्य-भाषा बताते हुए उनकी रचनाओं का वर्णन कीजिए।
10. तुलसीदास का जीवन-परिचय लिखिए।
11. तुलसी के समय की साहित्यिक, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ लिखिए।
12. "'विनय पत्रिका' भक्त तुलसी के हृदय का प्रत्यक्ष दर्शन है।" इस कथन के आधार पर तुलसी की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।
13. तुलसीदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

➡ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. "तुलसी ने राम और भरत के प्रेम का अपूर्व चित्रण किया है।" इस कथन पर प्रकाश डालिए।
2. तुलसीदास की 'विनयपत्रिका' के आधार पर उनकी भक्तिभावना का सोदाहरण निरूपण कीजिए।
3. 'तुलसी साहित्य में समन्वय साधना' विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
4. 'तुलसी तुलसी-सम पुनीत हैं' स्पष्ट कीजिए।
5. तुलसीदास के लोकनायकत्व के विषय में उल्लेख कीजिए।
6. तुलसी की मुख्य रचनाओं के नाम लिखिए।
7. कवितावली के आधार पर 'लंका-दहन' का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
8. तुलसी का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य कौन-सा है? उसके प्रमुख पात्रों का नाम लिखिए।

➡ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (क) हरो चरहि, तापहिं बरत, फरे पसारहिं हाथ।

   (ख) बालधी विसाल विकराल ज्वाल जाल मानौं।
2. अनुप्रास अलंकार एवं दोहा छन्द का लक्षण बताते हुए प्रस्तुत पाठ से एक-एक उदाहरण लिखिए।

●●●